मधुमक्खी पालन से स्वरोजगार का सृजन

कृषि कुंभ (अगस्त, 2023),
खण्ड 03 भाग 03, पृष्ठ संख्या 55–60

मधुमक्खी पालन से स्वरोजगार का सृजन

राम अजीत चौधरी, शुभम कुमार एवं रुचिका
सहायक प्राध्यापक, कृषि विज्ञान विभाग,
जे. बी. आई. टी. कॉलेज ऑफ अप्लाइड साइसेज, देहरादून, (उत्तराखंड), भारत।
Email Id: ajitjitu370@gmail.com

परिचय

मधुमक्खी कीट वर्ग का प्राणी है। यह एक समाजिक कीट हैं। मधुमक्खियां मोन समुदाय में रहने वाली कीटों वर्ग की जंगली जीव है इन्हें उनकी आदतों के अनुकूल कृत्रिम गृह (हईव) में पाल कर उनकी वृधि करने तथा शहद एवं मोम आदि प्राप्त करने को मधुमक्खी पालन या मौन पालन कहते है । शहद एवं मोम के अतिरिक्त अन्य पदार्थ जैसे गोंद, प्रोपोलिस, रायल जेली, डंक–विष भी प्राप्त होते है। मधुमक्खी पालन एक ऐसा ही व्यवसाय है जो मानव जाती को लाभान्वित कर रहा है यह एक कम खर्चीला घरेलु उद्योग है जिसमे आय, रोजगार व वातावरण शुद्ध रखने की क्षमता है यह एक ऐसा रोजगार है जिसे समाज के हर वर्ग के लोग अपना कर लाभान्वित हो सकते है। मधुमक्खी पालन कृषि व बागवानी उत्पादन बढ़ाने की क्षमता भी रखता है।

आज कल मधुमक्खी पालन ने कम लगत वाला कुटीर उद्योग का दर्जा ले लिया है। ग्रामीण भूमिहीन बेरोजगार किसानो के लिए आमदनी का एक साधन बन गया है मधुमक्खी पालन से जुड़े कार्य जैसे बढईगिरी, लोहारगीरी एवं शहद विपणन में भी रोजगार का अवसर मिलता है।

मधुमक्खी पालन के मामले में पंजाब अग्रणी प्रदेश बन गया है। देश में कुल शहद उत्पादन में इसका योगदान 30 प्रतिशत से अधिक हो गया है। फरीदकोट और फिरोजपुर जिले में पंजाब के 25,000 से अधिक लोग मधुमक्खी पालन उद्योग में लगे हैं। पंजाब में सालाना 10 टन से अधिक शहद का उत्पादन होता है और यहां से 47 देशों को शहद का निर्यात किया जाता है।

मधुमक्खी पालन के फायदे

- पुष्परस व पराग का सदुपयोग आय व स्वरोजगार का सृजन।
- शुद्ध मधु रायल जेली उत्पादन मोम उत्पादन पराग मौनी विष आदि।
- बगैर अतिरिक्त खाद बीज सिंचाई एवं शस्य प्रबन्ध के मात्र मधुमक्खी के मौन वंश को फसलों के खेतों व मेड़ों पर रखने से कामेरी मधुमक्खी के पर परागण प्रकिया से फसल सब्जी एवं फलोद्यान में सवा से डेढ़ गुना उपज में बढ़ोत्तरी होती है।
- मधुमक्खी पालन में कम समय कम लागत और कम ढांचागत पूंजी निवेश की जरूरत होती है।
- कम उपजवाले खेत से भी शहद और मधुमक्खी के मोम का उत्पादन किया जा सकता है।
- मधुमक्खियां खेती के किसी अन्य उद्यम से कोई ढांचागत प्रतिस्पर्द्धा नहीं करती हैं।
- मधुमक्खी पालन का पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मधुमक्खियां कई फूलवाले पौधों के परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस तरह वे सूर्यमुखी और विभिन्न फलों की उत्पादन मात्रा बढ़ाने में सहायक होती हैं।
- शहद एक स्वादिष्ट और पोषक खाद्य पदार्थ है। शहद एकत्र करने के पारंपरिक तरीके में मधुमक्खियों के जंगली छत्ते नष्ट कर दिये जाते हैं। इसे मधुमक्खियों को बक्सों में रख कर और घर में शहद उत्पादन कर रोका जा सकता है।
- मधुमक्खी पालन किसी एक व्यक्ति या समूह द्वारा शुरू किया जा सकता है बाजार में शहद और मोम की भारी मांग है।

मधु या शहद

www.KrishiKumbh.Com

मधु या शहद एक मीठा चिपचिपाहट वाला अर्ध तरल पदार्थ होता है जो मधुमक्खियों द्वारा पौधों के पुष्पों में स्थित मकरन्दकोशों से स्रावित मधुरस से तैयार किया जाता है और आहार के रूप में मौनगृह में संग्रह किया जाता है।

शहद में जो मीठापन होता है वो मुख्यतः ग्लूकोज और एकलशर्करा फ्रक्टोज के कारण होता है। शहद का प्रयोग औषधि रूप में भी होता है। मधु शर्कराओं एवं अन्य यौगिकों का मिश्रण होता है। कार्बोहाईड्रेट के संदर्भ में मधु में मुख्यतः फ्रक्टोज लगभग 36.2% एवं ग्लूकोज लगभग 36.2% जल 17.2% भस्म 0.2% होता है। जो इसे कृत्रिम रूप से उत्पादित इन्वर्टेड शुगर सीरप के समान रखता है मधु के शेष कार्बोहाईड्रेट में माल्टोज सकरोज एवं अन्य जटिल कार्बोहाईड्रेट होते हैं। मधु में नाममात्र को विभिन्न विटामिन एवं खनिज होते हैं। अन्य सभी पोषक स्वीटनरों की भांति ही मधु में अधिकांश शर्करा ही होती है और ये विटामिन या खनिजों का विशेष स्रोत नहीं है। मधु में अति लघु मात्रा में विभिन्न अन्य यौगिक भी होते हैं जो एंटीऑक्सीडेंट्स का कार्य करते हैं साथ ही क्राइसिन, पाइनोबैंकसिन, विटामिन सी, कैटालेज एवं पाइनोसेंब्रिन भी होते हैं। फिर भी मधु के विशिष्ट संयोजन उसे बनाने वाली मधुमक्खियों पर व उन्हें उपलब्ध पुष्पों पर निर्भर करते हैं। शहद एक प्राकृतिक स्वास्थ्यवर्धक आहार हैं।

मधुमक्खी परिवार

मधुमक्खी कीट वर्ग का प्राणी है। मधुमक्खी से मधु प्राप्त होता है जो अत्यन्त पौष्टिक भोजन है। यह संघ बनाकर रहती हैं। प्रत्येक संघ में एक रानी 100–200 नर और शेष श्रमिक होते हैं। मधुमक्खियाँ छत्ते बनाकर रहती हैं। इनका यह घोसला (छत्ता मोम से बनता है। इसके वंश एपिस में 7 जातियां एवं 44 उपजातियां हैं। मधुमक्खी नृत्य के माध्यम से अपने परिवार के सदस्यों को पहचान करती हैं। एक साथ रहने वाली सभी मधुमक्खियां एक मौनवंश (कॉलोनी) कहलाती हैं। एक मौनवंश में तीन तरह की मधुमक्खियां होती हैं : (1) रानी, (2) नर तथा (3) कमेरी।

रानी मधुमक्खी

नर मधुमक्खी

श्रमिक मधुमक्खी

रानी मधुमक्खी:

यह पूर्ण विकसित मादा होती है एवं परिवार की जननी होती है। एक मौनवंश में हजारों मधुमक्खियां होती हैं। इनमें रानी (क्वीन) केवल एक होती है। यही वास्तव में पूर्ण विकसित मादा होती है। रानी मधुमक्खी का कार्य अंडे देना है अछे पोषण वातावरण में एक इटैलियन जाती की रानी एक दिन में 1500–2000अंडे देती है। तथा देशी मक्खी करीब 700–1000 अंडे देती है। इसकी उम्र औसतन 23 वर्ष होती है। पूरे मौनवंश में अंडे देने का काम अकेली रानी मधुमक्खी ही करती है। यह आकार में अन्य मधुमक्खियों से बड़ी और चमकीली होती है जिससे इसे झुंड में आसानी से पहचाना जा सकता है।

नर मधुमक्खी:

यह रानी से छोटी एवं कमेरी से बड़ी होती है। रानी मधुमक्खी के साथ सम्भोग के सिवा यह कोई कार्य नही करती है। सम्भोग के तुरंत बाद इनकी मृत्यु हो जाती है और इनकी औसत आयु करीब ६० दिन की होती है। मौसम और प्रजनन काल के अनुसार नर मधुमक्खी (ड्रोन) की संख्या घटती–बढ़ती रहती है। प्रजनन काल में एक मौनवंष में ये ढाई–तीन सौ तक हो जाते हैं जबकि विपरीत परिस्थितियों में इनकी संख्या शून्य तक हो जाती है। इनका काम केवल रानी मधुमक्खी का गर्भाधान करना है।

कमेरी/श्रमिक मधुमक्खी:

यह अपूर्ण मादा होती है और मौनगृह के सभी कार्य जैसे अण्डों बच्चों का पालन पोषण करना, फलों तथा पानी के स्त्रोतों का पता लगाना, पराग एवं रस एकत्र करना , परिवार तथा छतो की देखभाल, शत्रुओं से रक्षा करना इत्यादि इसकी उम्र लगभग २–३ महीने होती है। किसी मौनवंश में सबसे महत्त्वपूर्ण मधुमक्खियां कमेरी (वर्कर) ही होती हैं। ये फूलों से रस ले आकर शहद तो बनाती ही हैं साथ–साथ अंडे–बच्चों की देखभाल और छत्ते के निर्माण का कार्य भी करती हैं।

प्रजातियां

जंतु जगत में मधुमक्खी आर्थोपोडा संघ का कीट है। विश्व में मधुमक्खी की मुख्य पांच प्रजातियां पाई जाती हैं। जिनमें चार प्रजातियां भारत में पाई जाती हैं। मधुमक्खी की इन प्रजातियों से हमारे यहां के लोग प्राचीन काल से परिचित रहे हैं। इसकी प्रमुख पांच प्रजातियां हैं

- यूरोपियन मधुमक्खी *(Apis mellifera)*
- भुनगा या डम्भर *(Trigona irridipensis)*
- भंवर या सारंग या चटटानी *(Apis dorsata)*
- पोतिंगा या छोटी मधुमक्खी *(Apis florea)*
- खैरा या भारतीय मौन *(Apis cerana indica)*

यूरोपियन मधुमक्खीः

इसका विस्तार संपूर्ण यूरोप अमेरिका ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका तक है। इसकी अनेक प्रजातियां जिनमें एक प्रजाति इटैलियन मधुमक्खी है। वर्तमान में अपने देश में इसी इटैलियन मधुमक्खी का पालन हो रहा है। सबसे पहले इसे अपने देश में सन् 1962 में हिमाचल प्रदेश में नगरौटा नामक स्थान पर यूरोप से लाकर पाला गया था। इसके पश्चात 1966–67 में लुधियाना पंजाब में इसका पालन शुरू हुआ। यहां से फैलते–फैलते अब यह पूरे देश में पहुंच गई है। इसके पूर्व हमारे देश में भारतीय मौन पाली जाती थी। जिसका पालन अब लगभग समाप्त हो चुका है।

मधुमक्खी का जीवन चक्रः

मधुमक्खी मे जीवन चक्र की चार अवस्थाये होती है।

1) अण्डा 2) लार्वा 3) प्यूपा 4) वयस्क

अ.डा यदि नर को'ा मे है तो उससे नर पैदा होगे व इसी प्रकार यदि मादा को'ा मे है, मादा पैदा होगी। रानी, श्रमिक व नर मे अ.डा अवस्था तीन दिन तक रहती हैं व वयस्क क्रमशः 15 से 16 दिन, 20 से 21 दिन, व 23 से 24 दिन मे तैयार होते है।

आधुतनक मौन गृह मे मधुमक्खी पालन

प्राचीन काल से मधुमक्खी अपना छत्ता प्राकृतिक रूप से पेड के खोखले, दीवार की दरारों, छज्जों, मिट्टी के घरों, लकडी के संदूक आदि में छत्ते बनाती है, जिससे मधु का निष्कासन करने के लिए छत्ते को काट कर निचोडते थे, जिसके फलस्वस्प निचोडते समय अण्डा, लार्वा व प्यूपा का रस भी मधु में आ जाता था और छत्ता टूट जाने पर उसका वंश ही नष्ट हो जाता था। इस प्रकार शुद्व मधु भी प्राती नहीं होता था तथा मौनवंश भी नष्ट हो जाता था इससे बचने के लिए वैज्ञातनकों ने क्रमशः शोध एवं अध्ययन करके प्रकृति में बनाये गए छत्तों के सिद्धान्त के अनुरूप तथा उसी के आधार पर मधुमक्खियो को पालने हेतू मौनगृह (लकडी के बक्से) व मधु का निष्कासन मशीन आदि उपकरणों का अवि'कार किया जिससे मधुमक्खियो (मौनवंश) को आसानी से लकडी के बक्से में पाला जा सकता है।

मधुमक्खी पालन का उपयुक्त समय

वैसे तो मधुमक्खी पालन पूरे बारहों महीने किया जा सकता है लेकिन मधुमक्खी पालन के लिए जनवरी से मार्च का समय सबसे उपयुक्त रहता है। वहीं नवंबर से फरवरी का समय तो इस व्यवसाय के लिए कॉफी फायदेमंद है।

मधुमक्खी पालन पुष्प पंचाग प्रबन्धन

पोषण की योजनाः मधुमक्खी पालक/कृषक को मधुमक्खी पालन करने से पूर्व इनके पोषण के पोषण के लिए पूरे वर्ष की योजना बनाना अनिवार्य है। मधुमक्खी का पोषण पराग व मकरन्द है, जो इन्हें फूलों से प्राप्त होता है। इसलिए मधुमक्खी पालकों/कृषको को चाहि, कि वो इस पालन को अपनाने से पूर्व ये सुनिश्चित कि किस माह में कौन सी वनस्पति से पूरे वर्ष नेक्टर व पोलन प्रचुर मात्रा मे मिळते रहेंगे, क्यों कि पोलन व नेक्टर प्राकृतिक रूप से प्राप्त नहीं होने की अवस्था मे कृत्रिम भोजन चीनी के घोल के रूप में दिया जाता है, जिससे मा्त्र मधुमक्खियो जीवन निर्वाह ही कर सकती है। जिन वनस्पतियों से पराग व मकरन्द प्रचुर मात्रा में मिलता है वे इस प्रकार हैं– सरसों, तोरिया, धनिया, धतनयां, सौंफ, नींबू, अरहर, लीची, सहजना, करौंदा, बरसीम, कद्दूवर्गीय सब्जी यूकेलिप्टस, यूकेलप्टस, करंज, आंवला, मूंग, शीशम, सूरजमुखी, नीम, खैर, मेंहदी, ज्वार, बाजरा, जवांसा, कटेरी, ललसोडा, अनार, खेजडी, बांसा आदि।

कृषक को चाहि, कि अपने क्षेत्र मे माहवार पुष्प कलेण्डर तैयार करे कि क्रमश किस माह मे कौन सी वनस्पति से मकरन्द व पराग उपलब्ध हो सकेगा। यदि वे वनस्पतियां पास के क्षेत्र मे हो तो मधुमक्खी पालक, मधुमक्खी पेटिका (हाइव) को वहां पर ले जाकर मकरन्द व पराग प्राप्त कर सकते हैं।

मधुमक्खी पालन के लिए स्थान निर्धारण व प्रबंधन

- मधुमक्खी पालन के लि, स्थान चुनाव के लिए आवश्यक है कि 2–3 कि.मी. क्षेत्र मे पेड पौधे बहुतायत मात्रा मे हो, जिसमे पराग व मकरन्द पूरे वर्ण मिल सकें।
- तेज हवाओं वाले स्थान पर सीधा प्रभाव नहीं होना चाहिएं। यदि स्थान छायादार पेड नही है तो वहां अप्राकृतिक रूप से छायादार स्थान बनाना चहिए।

- स्थान मुख्य सडक से थोडा दूर होना चाहिए। भूमि समतल व पानी का निकास उचित होना चाहिए।
- मधुमक्खी पालन के लि, साफ एवं बहता हुआ पानी मधुमक्खी पालन के लिए आवश्यक है।
- नया लगाया हुआ बगीचा मधुमक्खी पालन हेतू उचित है, ज्यादा घना बगीचा भी गमी के मौसम में हवा को आने जाने से रोकता है।
- मधुमक्खी पालन वाले स्थान के चारो तरफ तारबंन्दी या हेज लगाकर अवांछनीय आने वालों को रोका जा सकता है।
- मधुमक्खी पालन वाले स्थान पर पंक्ति से पंक्ति की दूरी 10 फुट व बाक्स से बाक्स की दूरी 3 फुट रखें। बक्सों को पंक्ति मे बिखरे रुप मे रखना चाहि,। एक स्थान पर 50 से 100 बक्से रखे जा सकते है।

नवीन मधुमक्खी पालन इकाई स्थापना एवं प्रबंधन

मधुमक्खी पालक/कृषक मधुमक्खी पालन 2 से लेकर 100 मौनगृह (हाइव) तक रख सकता है। एक मौनगृह में तलपट, शिशु खण्ड, मधु खण्ड, भीतर ढक्कन, ऊपरी ढक्कन व 20 चौखट मोमी शीट के साथ होती है। इसे दो मधुमक्खी कोलोनी से शुरू किया जा सकता है। एक मधुमक्खी कोलोनी में 8 चौखट मधुमक्खी एक रानी होती है। व चौखट मे अण्डा, लार्वा, प्यूपा भी होते है। अच्छी कोलोनी में प्यूपा की मात्रा अधिक होती है। एक मौनगृह में 20 फ्रेम (चौखट) मधुमक्खी होती है। लेकिन 20 चौखट मधुमक्खी खरीदने पर व्यय ज्यादा करना पडता है। इसलि, 8 फ्रेम कालोनी शुरूआत करने पर वर्ष भर में इतनी ही मधुमक्खी की कोलोनी और तैयार हो जाती है इसलिए एक वर्ष में पहले मौनगृह मजबूत करने चाहिए। एक मबबूत मौनगृह से औसतन 60 से 80 किग्रा शहद प्राप्त होता है। यदि कृषक सीनान्तरण (माइग्रेशन) पद्धति के द्वारा मधुमक्खी पालन करना चाहता है तो उसे 10 से 50 मौनगृह से शुरआत करनी चाहिए व कोशिश करनी चाहिए कि एक गांव या क्षेत्र मे मौनपालक सामूहक रुप से औसतन 150 मौनगृह सीनान्तरण पद्धति यानी एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर मधुमक्खी पालन करें। इससे एक स्थान से दूसरे पर लाने व ले जाने पर होना वाला व्यय प्रति व्यक्ति कम आता है।

ऋतु मौन (मधुमक्खी) प्रबंधन

ऋतुओं के अनुरूप मधुमक्खी पालने एवं अधिक से अधिक उत्पादन करने के लि, जो व्यवस्था एवं प्रबन्ध करना होता है उसे ऋतु मौन प्रबन्ध कहते है। यह 03 प्रकार का होता है।

वर्षा ऋतु मौन प्रबन्धनः

- मौनगृह को छाया में रखने अथवा पालीथीन से ढकना चाहिए।
- मौनगृह के अन्दर नमी न रहने पाये। यदि नमी हो तो धूप दिखाकर सूखा देना चाहिए।
- मोमी पतंगो का प्रकोप न होने पाये।
- कृत्रिम भोजन चीनी का घोल गर्म करके सप्ताह में दो बार देना चाहिए।
- यदि संभव हो तो पुष्प रस एवं पराग के सुलभता वाले क्षेत्र मे स्थानान्तरित करें।

2. शीत ऋतु मौन प्रबन्धनः

इस ऋतु में चीनी का घोल गर्म करके देना चाहिए। स्टार्टर देकर नये छत्ते बनवा लेना चाहिए। जिससे मौनवंश मधु उत्पादन एवं मौनवंश वृद्रधि हेतू पर्णतयाअनुकूल हो। शीतकाल मे यदि शीत लहर का प्रकोप हो तो पालीथीन से मौनगृह को ढकना चाहिए तथा गर्म पानी का घोल देते रहना चाहिए।

3. ग्रीष्म ऋतु मौन प्रबन्धनः

बसंन्त ऋतु के प्श्चात ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता हैं इस ऋतु मे नि'कासित में मधु का परिष्कण, विपणन एवं मौनगृह को छाया में रखने की व्यवस्था करनी चाहिए। ग्रीष्म काल में पुष्परस, पराग तथा पानी का अभाव होता है। ऐसी स्थिति मे कृत्रिम भोजन आधा चीनी और आधा पानी मिलाकर देते रहना चाहिए। इनके पीने हेतू जल की व्यवस्था एवं मौनगृह को जूट के बोरे से ढक कर पानी से नम बनाये रखने की व्यवस्था करनी चाहिए।

अनुमानित मधुमक्खी पालन इकाई आर्थिक विश्लेषण (50 बॉक्स यूनिट)

क्रम संख्या	मद का नाम	संख्या	दर (रुपये)	कीमत (रुपये)
अ	स्थाई व्यय खर्च			

1	मधुमक्खी पेटिका व बॉक्स व बी हाइव	50	1,000	50,000
2	मधुमक्खी कॉलोनी 10 फ्रेम	50	3,000	1,50,000
3	लोहे का स्टैण्ड	50	75	3,750
4	शहद निष्कासन मशीन 8 फेम्र	1	5,000	5,000
5	बी बेल	5	100	500
6	दस्ताने	5 जोडी	100	500
7	टूल किट	1	200	200
8	नेट व मच्छरदानी 12×12×10 फुट	1	2,300	2,300
9	टेण्ट, बर्तन आदि		8,000	8,000
10	अन्य फुटकर खर्चा		5,000	5,000
	योग (अ)			2,25,250
ब	**आवर्ती व्यय खर्चा**			
1	मधुमक्खी पेटिका 25	12	1,000	12,000
2	लोहे का स्टैण्ड	12	75	900
3	प्लास्टिक की बाल्टी	100	120	12,000
4	मौमी आधार शीट	11 किग्रा	300 किग्रा	33,00
5	सल्फर 10 ग्राम/पेकिंग	10 पैकिट	50 पैकिट	500
6	चीनी 3 किग्रा/पेकिंग	150 किग्रा	35 किग्रा	5,250
7	म्जदूरी	1	3,000 माह	36,000
8	स्थानान्तरण व माईग्रेशन खर्चा	3	20,000	20,000
9	अन्य फुटकर खर्चा		5,000	5,000
	योग (ब)			94,950
स	**ब्याज व मूल्य कटौती व्यय खर्चा**			
1	स्थाई खर्चा पर ब्याज		@14%	31,535
2	अस्थाई खर्चा पर 6 माह का ब्याज		@14%	6,646
3	स्थाई सामान पर मूल्य कटौती मधुमक्खी के अलावा		@10%	7,525
	योग (स)			45,706
	कुल योग (अ+ब+स)			3,65,906
छ	**आय व आमदनी**			
1	शहद 70 किग्रा पेटिका 50 पेटिका से	3,500 किग्रा	100 किग्रा	3,50,000

- मधुमक्खी पालक इकाई अनुदान सहायिा हेतू आपके जिले के उद्यान विभाग मे सम्पर्क करें।
- मधुमक्खी पालन इकाई स्थापना वित्तीय सहायता हेतू आपके क्षेत्र की सर्विस बैंक में ऋण सहायता के लिए सम्पर्क करें।

मधुमक्खी पालन क्यों ?

1. रोजगार एवं आय के साधन हेतू।
2. यह सरल एवं सस्ता उद्योग है।
3. कृषि, उद्यानिकी व वानिकी फसलों में गुणवत्ता व उपज बढाने हेतू।
4. पर्यावरण सुरक्षा एवं पारिस्थितिकी विकास हेतू।

क्या है मधुमक्खी पालन मधुमक्खी पालन योजना

मधुमक्खियां मोन समुदाय में रहने वाली कीटों वर्ग की जंगली जीव है इन्हें उनकी आदतों के अनुकूल कृत्रिम

गृह वा हईव में पाल कर उनकी वृद्धि करने तथा शहद एवं मोम आदि प्राप्त करने को मधुमक्खी पालन या मौन पालन कहते है। शहद एवं मोम के अतिरिक्त अन्य पदार्थ जैसे गोंद, प्रोपोलिस, रायल जेली, डंक–विष भी प्राप्त होते है।

मधुमक्खी पालन कैसे करें/मधुमक्खी पालन का समय

पृथ्वी पर लगभग 20000 से अधिक प्रकार की मधुमक्खियां है, जिनमें से केवल चार प्रकार की ही शहद बना पाती है, आमतौर पर मधुमक्खी के छत्ते में एक रानी मक्खी, कई हजार श्रमिक मक्खी और कुछ नर मधुमक्खी होते हैं। मधुमक्खियों का समूह श्रम विभाजन और विभिन्न कार्यों के लिए विशेषज्ञों का उत्तम उदाहरण होता है। मधुमक्खी श्रमिक मधुमक्खियों की मोम ग्रंथि से निकलने वाले मोम से अपना घोसला बनाते हैं जिन्हें शहद का छत्ता कहा जाता है।

देश में चार प्रकार की मधुमक्खियों की प्रजाति पाई जाती है जिसमें यूरोपियन इटेलियम बी है इसका मधुमक्खी का पालन काफी आसानी से पाल सकते है क्योंकि वह बहुत शांत स्वभाव की होती है और एक परिवार की तरह उनकी संरचना होती है उस हिसाब से वह काम करती है।

इन मधुमक्खियों का अंधेरे में छत्ता होता है और सामांतर छत्ते यह लगाती है। किसानों की आय बढ़ाने करने के लिए और मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के लिए देश के कई संस्थान इस व्यवसाय की ओर ध्यान दे रहे है। किसी मान्यता प्राप्त से संस्थान से प्रशिक्षण लेकर इस व्यवसाय को शुरू किया जा सकता है।

मधुमक्खी पालन शुरू करने में कितनी लागत / मधुमक्खी पालन की लागत

शुरुआती दौर में पांच कलोनी (पांच बाक्स) से शुरू कर सकते है एक बॉक्स में लगभग में चार हजार रुपए का खर्चा आता है तो अगर आप पांच ऐसे बॉक्स लेंगे तो बीस हजार रुपए का खर्चा आता है। इनकी संख्या को बढ़ाने के लिए समय समय पर इनका विभाजन कर सकते हैं। अगर ठीक से विभाजन से कर लिया तो एक साल में 20000 हजार बक्से तैयार किए जा सकते हैं।

मधुमक्खी पालन बॉक्स कितनी प्राइस/मधुमक्खी पालन बॉक्स प्राइस

एक बॉक्स की कीमत चार हजार रुपए है जिसमें मधुमक्खी, छत्ता सहित बक्सा भी रहता है। किसानों को मधुमक्खी पालन योजना के तहत एक बक्से पर 75 प्रतिशत का अनुदान मिलता है।

कहां से ले सकते है बॉक्स व मधुमक्खी

दिल्ली में नेशनल बी बोर्ड से प्रमाणित संस्थाएं है उनसे आप मधुमक्खियों को खरीद सकते है। उद्यान विभाग से भी ले सकते है। कृषि विज्ञान केंद्र से भी मधुमक्खी ले सकते है।

मधुमक्खी पालन से कमाई/मधुमक्खी पालन से आमदनी

मधुमक्खी पालन के उपयोग में आने वाले बाक्स 12 इंच चौड़ा और 22 इंच लंबा होता है। एक बक्से में 10 या उससे कम फ्रेम होती है। कम फ्रेम होने पर शहद कम इक्ट्ठा होता है। एक बाक्स से दो महीने में 50 से 60 किलो शहद का उत्पादन होता है। शहद बेचने पर एक बाक्स पर करीब 3 हजार रुपए का मिलता है। जैसे–जैसे बाक्सों की संख्या आप बढ़ाते जाएंगे उतना ही आपको आमदनी होगी।

कहां से ले सकते हैं प्रशिक्षण / मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण केंद्र

उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण निदेशक एस.बी. शर्मा ने जानकारी दी है कि जनपद केंद्र सहारनपुर, बस्ती एवं अधीक्षक राजकीय उधान प्रयागराज में मधुमक्खी पालन का दीर्घकालीन प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मधुमक्खी पालन के लिए शुरू किए जा रहे माह के प्रशिक्षण के लिए सामान्य योज्यता की जरूरत है। उत्तर प्रदेश के कोई महिला या पुरुष की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता कक्षा–08 उत्तीर्ण होना आवश्यक है। इसके अलावा अलग–अलग राज्यों में प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है इसकी जानकारी आप जिला बागवानी अधिकारी राज्य सरकार के निदेशक, बागवानी प्रबंधक निदेशक, राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड, बी विंग, दूसरी मंजिल, जनपथ भवन, जनपथ रोड, नई दिल्ली, फोन नं. 011–23325265 पर ले सकते हैं।